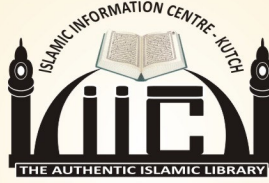


દીન કે તીન અહમ ઉસૂલ

શૈખુલ ઈસ્લામ મુહમ્મદ અત્તમીમી રહ.

ગુજરાતી લિપિયાંતર
મુહમ્મદ ફાઝલ ઉસ્માન ખત્રી
અશરફઅલી ઉસ્માન ખત્રી



ઈસ્લામિક ઈન્ફર્મેશન સેન્ટર

હોટલ નુરાની પાસે, ડાંડા બજાર, ભુજ - કચ્છ.

Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

दीन के तीन अहम उसूल

तालीफ़ : शैबुल इस्लाम मुहम्मद अत्तमीमी रह.

तम्हीद

कारिधने किराम अल्लाहतआला आप पर रहमत नाज़िल इरमाअे, ये आत अरुधी तरह उहन नशीन कर लीज़िअे के हम पर दर्श उैल आर मसाइल का इल्म हासिल करना वाज़िअ है.

(१) पेहला मस्अलह : हुसूले इल्म

यअनी अल्लाह तआला, उसके नबी (सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम) और दीने इस्लाम की मअूरिइत दलाइल के साथ हासिल करना.

(२) दूसरा मस्अलह : अमल

हासिल कईह इल्म पर अमल पेरा होना.

(३) तीसरा मस्अलह : दअ्पत

इस (दीने इस्लाम) की तरइ दअ्पत देना.

(४) चौथा मस्अलह : सअर व इस्तिआमत

दअ्पते दीन में आनेवाली मुश्किलात व मसाइल पर सअर व इस्तिआमत इफ्तियार करना और इन मसाइल की दलील अल्लाहतआला का ये इशाइ गिरामी है : “उमाने की कसम, इन्सान दरहकीकत असारे में है, सिवाअे उन लोगों के जो इमान लाअे और नेक अअ्माल करते रहे और अेक दूसरे को हक्क की नसीहत और सअर की तल्कीन करते रहे.” (सूरतुल अरर - १०३)

इमाम शाइइ रहमतुल्लाह अलेहि का इंस सूरह अरर के आरे में इशाइ है: “अगर अल्लाहतआला अपनी मअ्लूक पर अतौरे हुअ्जत सिई इसी अेक सूरह को नाज़िल इरमाते तो ये उनकी हिदायत के लिअे काई होती.”

और इमाम जुआरी रहमतुल्लाहि अलेहि ने (सहीह) जुआरी शरीइ में अेक आल की इफ्तियाअ यूं की है : कौल व अमल से कअ्ल हुसूले इल्म का आ्यान और उसकी दलील अल्लाहतआला का ये इशाइ है : “आन लीज़िअे के अल्लाहतआला के सिवा कौइ मअ्बूद नहीं और आप अपनी आता की मुआई मांगते रहीअे.” (सूरतुल मुहम्मद आयत - १८)

(इअदअ अिल इल्मी) युनांये अल्लाहतआलाने इंस में कौल व अमल से पेहले इल्म का उिक किया है.

कारिधने किराम, अल्लाहतआला आप पर अपनी रहमतें नाज़िल इरमाअे, ये आत ली अरुधी तरह उहन नशीन करलें के मन्दरुअह उैल तीन

मसाधल का एलम हासिल करना और उन पर अमल करना भी हर मुसलमान मर्द और औरत पर वाजिब है.

(१) पहला मसअलह :

अल्लाहतआलाने हमें पैदा किया, रिज़्क अता इरमाया और यूं ही हमें मुहम्मल नहीं छोडा बल्के हमारी तरफ़ अपना रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भेजा, जिसने उनकी धर्ताअत की वह जन्नती हो गया और जिसने उनके अहकाम से सतर्ताणी व सर्कशी की वह जहन्नमी हो गया और धसकी दलील अल्लाहतआला का ये धर्शाह है : “तुम लोगों के पास हमने धसी तरह अेक रसूल गवाह बनाकर भेजा है जिस तरह हमने क़िरऔन की तरफ़ अेक रसूल भेजा (क़िर ऐभ लो जब) क़िरऔनने उस रसूल की बात न मानी तो हमने उसको बडी सप्तती के साथ पकड लिया.”

(सूरतुल मुञ्जिम्मल आयत- १५,१५)

(२) दूसरा मसअलह :

अल्लाहतआला को ये बात कतअन् नागवार है के उसकी धबादत में उसके साथ किसी दूसरे को भी शरीक किया जाये, न किसी मुकर्रिब इरिशते को और न ही अल्लाहतआला की तरफ़ से किसी आनेवाले नबी को और धसकी दलील ये धर्शाह है : “और ये के मरिजहँ अल्लाह के लिअे हैं लिहाज़ा (धन में) अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो.” (सूरतुल जिन्न आयत- १८)

(३) तीसरा मसअलह :

जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की धर्ताअत व इर्माबर्दारी की और अल्लाहतआला की वहदानीयत व यक़्ताध को भी तस्लीम किया उसके लिअे ये हरगिज़ जाधज़ नहीं के वह अैसे लोगों से राह व रस्म और रिशतह व नातह रफ़्ते जो अल्लाहतआला और उसके रसूल के साथ दूश्मनी रफ़ते हों प्वाह वह दुन्यवी रिशतह के अेअ्तबार से कितना ही करीबी रिशतेहदार क्युं न हो !

धस बात की दलील अल्लाहतआला का ये धर्शाह है : “तुम कभी ये न पाओगे के जो लोग अल्लाह और आभिरत पर धमान रफ़नेवाले हैं वह उन लोगों से मुहब्बत करते हों जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुजालिफ़त की है प्वाह वह उनके आप हों या उनके धैटे या उनके भाध या उनके अहले भाण्डान, ये वह लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाहने धमान ख़ुत् कर दिया है और उन (के कुलूब) को अपने क़ैज़ से कुप्पत बफ़शी है, वह उनको अैसी जन्नतों में दाभिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वह हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुवा और वह अल्लाह से राज़ी हुअे, वह अल्लाह की जमाअत के लोग हैं, जबरदार रहो, अल्लाह की जमाअत वाले ही इलाह पानेवाले हैं.” (सूरतुल मुजदिलह आयत-२२)

कारिधने किराम, अल्लाहतआला अपनी धताअत व इर्माईरी की तरफ आपकी रहनुमाई करे, ये बात ली बजूबी समज ले के हनीइव्यत व भिल्लते धबराहीमी ये हे के आप पूरे धभ्लास के साथ सिई अेक अल्लाह की धबाएत करे, धसी काम का अल्लाहतआलाने तमाम लोगो को हुक्म दिया हे ओर धसी गरज के लिअे उन्हे पैदा इरमाया हे, जैसा के धशदि धलाही हे : “मैने जिन्न और धन्सानो को धसके सिवा किसी काम के लिअे पैदा नहीं किया हे के वह मेरी बंदगी करे.” (सूरतुल आरियात आयत- ५५)

(यअ्बुदून) के मअ्नी ये हे :

“मेरी वहदानीयत व यइताई को दिल् व जान से कुबूल करे.”

अल्लाहतआलाने जिन् उमूर का हुक्म दिया हे उनमे सबसे अईअ व आअ्ला थीज “तोहीद” हे , जो हर किस्म की धबादात सिई अल्लाह वाहिद के लिअे बजा लाने का दूसरा नाम हे, ओर जिन् उमूर से अल्लाहतआलाने मनअ इरमाया हे उनमे सबसे बडा शिक है जो गेरुल्लाह को अपनी निदा व दुआ मे उसके साथ शामिल कर लेने का दूसरा नाम हे. धसकी दलील अल्लाहतआला का ये इरमाने गिरामी हे : “और तुम सब अल्लाहतआला की बंदगी करो और उसके साथ किसी को शरीक न बनाओ.” (सूरतुल निसा आयत- ३५)

दीन के तीन अहम उसूल

अगर आपसे ये पूछा जाअे के वह कौन से तीन उसूल हे जिन्की मअरिइत हासिल करना हर धन्सान पर वाजिब व जरूरी हे ? तो केह दीजिअे,

- (१) बंदे का अपने रब की मअरिइत हासिल करना.
- (२) अपने दीन की मअरिइत हासिल करना.
- (३) अपने नबी हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मअरिइत हासिल करना.

पेहला उसूल

अल्लाहतआला की मअरिइत :

अगर आपसे धस्तिइसार किया जाअे के आपका रब कौन हे ? तो आप केह दीजिअे के मेरा रब अल्लाह हे जिसने अपने इज्ज व करम से मेरी ओर तमाम जहानो की परवरिश की, वही मेरा मअ्बूद हे उसके सिवा मेरा दूसरा कोई मअ्बूद नहीं ओर उसकी रबूबीयत व परवरदिगारी की दलील ये धशदि गिरामी हे : “हर किस्म की तअरीफ अल्लाहतआला के लिअे हे जो तमाम जहानो का परवरिश करने ओर पालनेवाला हे.” (सूरतुल इातिहा आयत - १)

अल्लाहतआला की ऌात बाबरकत के सिया हर चीऒ आलम (ऒहान) हे ओर मेँ उस आलम (ऒहान) का अेक ईई हूँ.

अगर आपसे ये सवाल किया ऒाअे के आपने अपने रब को किस चीऒ के ऒरीअे पह्याना ? तो केह दीऒिअे के उसकी आयात (निशानियों) ओर मऒलूक़ात के ऒरीअे से पह्याना ओर उसकी निशानियों मेँ से रात, दिन, सूरऒ ओर चाँद का वऒूद हे ओर उसकी मऒलूक़ात मेँ से सातों ऒमीनेँ ओर सातों आस्मान हेँ ओर ऒे कुछ उन सब के अँदर ओर उनके माऒेन हे.

अल्लाहतआला की निशानियों की दलील उसका ये एर्शाद हे : “अल्लाहतआला की निशानियों मेँ से हेँ ये रात ओर दिन ओर सूरऒ ओर चाँद, सूरऒ ओर चाँद को सऒदह न करो बल्के उस अल्लाह को सऒदह करो ऒिसने उनहेँ पैदा किया हे, अगर झील पाकिअ तुम उसीकी एबादत करने वाले हो.” (सूरतुल कुदिसलत आयत - 3७)

ओर उसकी मऒलूक़ात की दलील उसका ये इर्मान हे : “दरहकीकत तुम्हारा रब अल्लाह ही हे ऒिसने आस्मानों ओर ऒमीन को छे दिनों मेँ पैदा किया ओर ऒिर अपने अर्शे बरी पर मुस्तवी हुवा, ऒे रात को दिन पर ढाँक देता हे ओर ऒिर दिन रात के पीछे ढौडा यला आता हे, ऒिसने सूरऒ, चाँद ओर सितारे पैदा किअे सब उसके इरमान के ताबिअ हेँ, ऒबरदार रहे उसीका ऒल्क हे ओर उसीका अमर हे, बडा बाबरकत हे अल्लाह सारे ऒहानों का मालिक व परवरदिगार.” (सूरतुल आअ्राइ आयत- ५॒)

ओर रबने काएनात ही लाएके एबादत ओर मअ्बूदे बरहकक हे, उसकी दलील ये एर्शाद एलाही हे : “लोगो ! अंदगी एर्ऒितयार करो अपने उस रब की ऒे तुम्हारा ओर तुमसे पेहले ऒे लोग गुऒरे हेँ, उन सब का ऒालिक हे, अऒब नही के तुम (दोऒऒ से) बय ऒाओ, वही तो हे ऒिसने तुम्हारे लिअे ऒमीन का इर्श बिछाया ओर आस्मान की छत बनाई ओर ओपर से पानी बरसाया ओर उसके ऒरीअे से हर तरह की पैदावार निकाल कर तुम्हारे लिअे रिऒ्क बहम पहोंयाया, बस ऒब तुम ये ऒानते हो तो दुसरोँ को अल्लाह का मद्दे मुकाबिल न हेहराओ.” (सूरतुल बकरह आयत- २१,२२)

एमांम एबने कषीर रहमतुल्लाहि अलेहि ने एस आयत की तइसीर बयान करते हुअे लिऒ्ऒा हे : “एन तमांम मऒ्कूरह अश्या का ऒालिक (पैदा करनेवाला) ही हर किस्म की एबादत का सहीह हक्कदार हे.”

(तइसीर एबने कषीर :१:५७)

अइसामे एबादत :

अल्लाहतआलाने ऒिन अन्वाअ व अइसाम की एबादत को बऒालाने का हुइम दिया हे मऒलन इस्लाम, एमांन, एहसान ओर अैसे ही दुआ व ऒौइ,

उम्मीद व रजाअ, तपक्कुल, रब्बत, र्हत (डर), जुशूअ, जशरय्यत, रुजूअ, धररतआनत, धररतआऱह (पनाह तलनी), धररतगाषह, ऱबह व कुर्बानी और नऱर व मन्नत और धनके धलावा और ली धबादते हैं जिनका अल्लाहतआलाने हुक्म दिया है और ये सब की सब अल्लाहतआला के साथ मजूस हैं.

धस बात की दलील ये धशधि धलाही है : “और ये के मरररहे अल्लाह के लररहे हैं लररऱऱ धन में अल्लाह के साथ कसरर और को न पुकारे.”

(सूरतुल जर्रन आयत- १ॢ)

जसर कसररने धन मऱूरह बाला धबादत में से कसरर ली धबादत को कसरर गेरुल्लाह (इररशते, ननी, वली, पीर व मुशररध) के लररहे कसरर वह मुशररक व काकरर है और धसकी दलील ये धशधि रब्बानी है : “और जो कोध अल्लाह के साथ कसरर और मअ्बूद को पुकारे जसरके लररहे उसके पास कोध दलील नहीं तो उसका हसरब उसके रब के पास है बेशक काकरर कली इलाह नहीं पा सकते.” (सूरतुल मुअ्मरनून आयत- ११७)

मऱूरह अइसाम के धबादत होने के दलाधल :

• “दुआ” के धबादत होने की दलील, हदीषे पाक में ननीरर अइरम सल्लल्लाहु अलैरर व सल्लम का ये धशधि गररामी है : “दुआ धबादत का मऱऱ (असल) है.” (तरररररर)

और कुअरने पाक में “दुआ” के धबादत होने की दलील ये इररने रब्बानी है : “तुम्हारा रब केह्ता है के, “मुजे पुकारे में तुम्हारी दुआरर कुबूल करंगा जो लोग गमंड में आकर मेरी धबादत से मुंह मोदते हैं, ऱरर वह ऱलील व ऱवार हो कर जहन्नम में दाररल होंगे.” (सूरतुल गाकरर आयत- ॡ०)

• “जोइ” के धबादत होने की दलील ये धशधि धलाही है : “पस तुम धनसानों से न दरना बलके मुज से दरना अगर तुम हकीकत में साररने धमान हो.” (सूरतुल आलर धमरान आयत- १७५)

• “ उम्मीद व रजाअ” के धबादत होने की दलील ये आयते कुअरनी है : “पस जो कोध अपने रब की मुलाकात का उम्मीदवार हो उसे यारररर के नेक अमल करे और अंदगी में अपने रब के साथ कसरर और को शरीक न करे.” (सूरतुल कहइ आयत- ११०)

• “तपक्कुल” के धबादते धलाही होने की दलील ये इररने धलाही है : “और अल्लाह पर बरोसा (तपक्कुल) रभ्जो अरग तुम मोमरन हो.” (सूरतुल मारधदह आयत- २३)

कुअरने पाक के दूसरे अेक मकाम पर यूं धशधि है : “और जो अल्लाह पर बरोसा करे तो अल्लाह उसके लररहे काइी है.” (सूरतुल तलाक आयत- ३)

• “रज्जवत व रज्जवत ओर पुशूअ” के एभाएत होने की दलील ये इमनि
बारी तआला है : “ये लोग नेकी के कामों में दोड धूप करते थे और हमें रज्जवत
और जौक के साथ पुकारते थे और हमारे आगे जूके हूअे थे.”

(सूरतुल अम्बिया आयत- ८०)

• “अशियत” के एभाएत होने की दलील ये एशएटि रज्जवानी है : “तुम
उन (आलिमों) से न डरो बल्के मुज से डरो.”

(सूरतुल बकरह आयत- १५०)

• “एनाबत व रुजूअ” के एभाएत होने की दलील ये आयत है : “और
पलट आओ अपने रज्ज की तरफ और मुतीअ बन जाओ उसके.”

(सूरतुल जुमर आयत- ५४)

• “एस्तिआनत” के एभाएत होने की दलील ये एशएटि एलाही है : “हम
तेरी ही एभाएत करते हैं और तुज ही से मदद मांगते हैं.”

(सूरतुल इतिहा आयत- ५)

हदीष शरीफ में “एस्तिआनत” के एभाएत होने के मुतअल्लिक ये एशएटि
रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक जेय्यीन दलील है : “जब
तुम मदद तलब करो तो अल्लाहतआला से तलब करो.”

(तिर्मिज़ी-हसन सहीह)

• “एस्तिआजह (पनाह तलबी)” के एभाएत होने की दलील ये आयते
कुर्बानी है : “कहो मैं पनाह मांगता हूं एन्सानों के रज्ज, एन्सानों के बाएशाह
(अल्लाह) की.” (सूरतुल नास आयत- १,२)

• “एस्तिगाषह” के एभाएत होने की दलील ये इमनि रज्जवानी है : “(उस
वक्त को याद करो) जब तुम अपने रज्ज से फरियाद कर रहे थे तो उसने तुम्हारी
फरियाद सुन ली.” (सूरतुल अन्झाल आयत- ८)

• “जबह व कुर्बानी” के एभाएत होने की दलील ये आयते कुर्बानी है :
“कहो ! मेरी नमाज, मेरे तमाम मरासिमे उबूदिय्यत (कुर्बानी) मेरा गुना
और मेरा मरना सब कुछ अल्लाह रज्जुल आलमीन के लिअे है जिसका कोए
शारीक नहीं और एसीका मुजे हुक्म दिया गया है और सब से पेहले सरे
एताअत जुकानेवाला मैं हूं.” (सूरतुल अन्आम आयत- १५२, १५३)

और हदीषे पाक में एसकी दलील ये एशएटि रिसालते मआब सल्लल्लाहु
अलैहि व सल्लम है : “जिसने किसी गैरुल्लाह (नबी, पली, पीर व मुशिद,
साहिबे मजार) के तर्कुरुब के लिअे जनवर जबह किया, उस पर
अल्लाहतआलाने लअ्नत की है.” (सहीह मुस्लिम)

• “नजर” के एभाएते एलाही होने की दलील ये एशएटि रज्जवानी है :

(ये वह लोग हैं) जो नज़र पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसकी आज़त हर तरफ़ फैली हुई होगी.” (सूरतुल धन्सान (दहर) आयत- ७)

दूसरा उस्ल

दीने इस्लाम को दलायल के साथ जानना :

तोहीटे धलाही को दिल व जान से अपनाते हुअे अपने आपको अल्लाहतआलाके मुतीअ व सुपुर्द कर देने, उसके अह्काम की धताअत करते हुअे उसका ताभिअ इर्मान रेहने और उसके साथ किसी दूसरे को हर्गिज़ शरीक न ठेहराने का नाम “दीन” है.

दीन के तीन दरजात हैं :

- (१) धस्लाम.
- (२) धमान.
- (३) धहसान.

और इर धन तीनों में से हर अेक दरजे के कुछ अर्कान हैं :

पेहला दरजह

धस्लाम और उसके पांच अर्कान :

- (१) धस जात की शहादत देना के अल्लाहतआला के सिवा कोय मअ्बूटे बरहक्क नहीं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम अल्लाह के सअ्ये रसूल हैं.
- (२) नमाज़ काधम करना.
- (३) ञकात अदा करना.
- (४) रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रणना.
- (५) बैतुल्लाह शरीफ़ का हज्ज करना.

दलायले अर्काने इस्लाम

शहादते तौहीद :

शहादते तौहीद (अल्लाह तआला के मअ्बूट पह्दहु ला शरीकलह होने) की दलील ये धशटि धलाही है : “अल्लाहने षुद शहादत दी है के उसके सिवा कोय लायकि धबादत नहीं और (यही शहादत) सब इरिशतों और सब अहले धल्मने ली दी है, वह धन्साइ पर काधम है, उस ञबरदस्त हकीम के सिवा

झील पाकिस्थ कोय लायकि र्घभादत नहीं.” (सूरतुल आलि र्घमरान आयत- १८)

शहादते तोहीद का मअनी ये है के अल्लाहतआला के सिवा कोय हकीकी मअबूद नहीं, “ला र्घलाह” में हर उस चीज की नहीं है जिसकी अल्लाहतआला के सिवा पूजा की जाती है और “र्घल्लाह” में सिर्फ़ अेक अल्लाह के लिअे हर किस्म की र्घभादत का र्घब्नात है, उसकी र्घभादत में उसका कोय शरीक नहीं, बिल्कुल र्घसी तरह जैसा के उसकी बादशाही में उसका कोय शरीक और हिस्सेदार नहीं है.

र्रस शहादत की तस्सीर व तशरीह अल्लाहतआला ही के र्घन इरामीन में पाकिअ तोर पर मौजूद है, र्घशादि रब्बानी है : “और याद करो वह वक्त जब र्घबरहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बाप और अपनी कौम से कहा था, “तुम जिसकी बंरगी करते हो मेरा र्घनसे कोय तअल्लुक नहीं मेरा तअल्लुक सिर्फ़ उससे है जिसने मुजे पैदा किया, वही मेरी रहनुमाय करेगा और र्घबरहीम यही कलिमह (अकीदह) अपने पीछे अपनी औलाद में छोड गये ताके वह उसकी तरफ़ रुजूअ करें.” (सूरतुल जुफ़ुरु आयत- २६, २७, २८)

और इरमाने बारी तआला है : “आप इरमा दीजिये, अेय अेहले किताब ! आओ अेक अैसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान यक़्सां है, ये के हम अल्लाह के सिवा किसी की बंरगी न करें उसके साथ किसी को शरीक न ठेहरायें और हम में से कोय अल्लाह के सिवा किसी को रब न बना ले, र्घस दरूपत को कुबूल करने से अगर वह मुंह मोडें तो साफ़ केह दीजिये के आप लोग गवाह रहो, हम तो मुस्लिम (सिर्फ़ अल्लाह की बंरगी व र्घताअत करनेवाले) हैं.” (सूरतुल आलि र्घमरान आयत- ६४)

शहादते रिसालत :

र्रस बात की शहादत के हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं, (र्रस) की दलील ये र्घशादि र्घलाही है : “देओ तुम लोगों के पास अेक रसूल आया है जो जुद तुम ही में से है, तुम्हारा नुकसान में पडना उस पर शाक है, तुम्हारी इलाह का वह भाहिश्मंद है, र्घमानवालों के लिअे वह बडा शईक और रहीम है.” (सूरतुल तौबाह आयत- १२८)

हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के रसूलुल्लाह होने की शहादत देने के मअनी ये हैं के आपके अहकाम की र्घताअत की जाये, आपने जो जबर ली दी है उसकी तस्दीक की जाये, आपने जिन उमूर से रोका और मनअ किया है, उनसे कतर्घ र्घजतनाब किया जाये और अल्लाहतआला की र्घभादत सिर्फ़ मशरूअ तरीके ही से की जाये.

नमाज, जकात और तस्सीरे तौहीद की मुशतरकह दलील जालिके कार्रनात का ये र्घशादि है : “और उनको र्घसके सिवा कोय हुक्म नहीं दिया गया था के अल्लाह की बंरगी करें, अपने दीन को उसके लिअे जालिस कर के बिल्कुल

यक्षू हो कर और नमाज़ काईम करे और झकात दें, यही निहायत सहीह व दुरुस्त दीन है.” (सूरतुल बेय्यीनह आयत- ५)

रमज़ानुल मुबारक के रोउं रभने की दलील ये एशटि रब्बानी है : “अय लोगो ! जो एमानलाये हो तुम पर रोउं इर्ज़ कर दीये गये जिस तरह तुम से पेहले लोगो पर इर्ज़ किये गये थे एस से तयक्कुअ है के तुम में तकवा की सिफ़त पैदा होगी.” (सूरतुल बकरह आयत- १८३)

बेतुल्लाह शरीफ़ का हज़ूज़ करने की दलील ये इमनि एलाही है : “लोगो पर अल्लाहतआला का ये हक्क है के जो एस घर तक पहुँचने की ताकत रभता हो वह उसका हज़ूज़ करे और जो कोएँ एस हुक्म की पैरवी से एन्कार करे तो उसे मअलूम होना चाहिये के अल्लाह तमाम दुनियावालो से बेनियाज़ है.”

(सूरतुल आलि एमरान आयत- ८७)

दूसरा दरज़ह

एमान और उसके अर्कान :

एशटि नबवी है : “ एमान के सत्तर (७०) से ली कुछ ख़्याएह शुअ्बे हें जिन में से आअ्ला तरीन दरज़ह ला एलाह एल्लेलाह (अल्लाह के सिवा कोएँ मअबूटे बर हक्क नहीं) केहना है और सब से अदना दरज़ये एमान रास्ते से एज़ा व ऊरर रिसां चीज़ों (कांटे वगेरह) को हटाना है.” “और शर्म व हया ली एमान का अेक शुअ्बह है.” (सहीह मुस्लिम)

एमान के छे (५) अर्कान हें :

- (१) अल्लाह पर एमान लाना.
- (२) उसके इरिशतो पर एमान लाना.
- (३) उसकी किताबों पर एमान लाना.
- (४) उसके रसूलों पर एमान लाना.
- (५) रोउं कयामत पर एमान लाना.
- (६) अरछी व बुरी तकदीर पर एमान लाना.

दलाएले अर्काने एमान

एमान के एन छे (५) अर्कान में से पेहले पांच की दलील अल्लाहतआला का ये एशटि गिरामी है : “नेकी ये नहीं है के तुमने अपने येहरे मशिरक की तरफ़ कर लिये या मशिरक की तरफ़ बलके नेकी ये है के आदमी अल्लाह पर और योमे आभिरत पर और मलाएकह (इरिशतो) पर और अल्लाह की नाज़िल की

हूँ किताब और उसके पयगम्बरों पर धमान व यकीन रफ्ने.”

(सूरतुल बकरह आयत - १७७)

और छडे रुक्न “तकदीरे जेर व शर” या अरुधी व बूरी तकदीर, धसकी दलील ये इमनि धलाही है : “हमने हर चीज़ अेक तकदीर के साथ पैदा की है.” (सूरतुल कमर आयत - ४८)

तीसरा दरजह

धहसान :

धहसान का अेक ही रुक्न है के आप अल्लाहतआला की धबादत (धस भुशूअ व भुजूअ और धनामत व रुजूअ से) करे के गोया आप उसे बयश्मे भुद देभ रहे हैं और अगर आप धस भकाम को नहीं पा सकते के आप देभ रहे हैं तो कम अरू कम ये आलम तो झरूर ही होना चाहिये के वह आपको देभ रहा है.

दलाधले धहसान

धहसान के कुआनी दलाधल ये आयते मुबारकह हैं :

“अल्लाह उन लोगों के साथ है जो तकवा से काम लेते हैं और जो ‘धबादतों को’ अरुधी तरह करते हैं.” (सूरतुल नहल आयत- १२८)

दीगर इमनि धलाही है : “और उस झबरदस्त और रहीम पर तपक्कुल रभिये जो आपको उस वक्त देभ रहा होता है जब आप उठते हैं और सजदह गुजार लोगों में आपकी नकूल व हर्कत पर निगाह रभता है, वह सब कुछ सुननेवाला और जाननेवाला है.”

(सूरतुल शुअ्राअ आयत- २१७ से २२०)

भकीद धशादि रब्बानी है : “अय नबी ! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप जिस हाल में ली होते हों और कुआन में से जो कुछ ली सुनाते हों और लोगो ! तुम ली जो कुछ करते हो उस सब के दौरान में, हम तुमको देभते रेहते हैं.” (सूरतुल यूनुस आयत- ५१)

और दीन के धन तीन दरजात पर सुन्नत से दलील नबीअे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ये भशूर हदीष है जो हदीषे जिबरधल (अलैहिस्सलाम) के नाम से भअरूइ है. “हजरत उमर (फ़ाउक) धिन भत्ताब रदियल्लाहु अन्हुु बयान करते हैं के हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे थे के अयानक अेक अैसा आदमी हमारी भजलिस में पारिद हुवा जिसके कपडे निहायत सफ़ेद और बाल धिन्तहाध सियाह थे, उस

पर सफ़र कर के आने की कोशिश अलामत(गर्भ गुबार और परागंघी) न थी और हम में से कोई उसको जानता भी नहीं था, वह नबीअे अक़्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने आप के गुटनों से गुटने मिला कर और अपने हाथ अपनी रानों पर रख कर दो जानों को कर बाअदब तरीके से ढैह गया और उसने कहा के अय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुजे बताएअे के इस्लाम क्या है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरमाया, इस्लाम ये है के आप इस बात की गवाही दें के अल्लाह के सिवा कोई मअ्बूदे बरहक़क़ नहीं और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के सअ्ये रसूल हैं और ये के आप नमाज़ काइम करें, ञकात अदा करें, रमज़ानुल मुबारक के रोअे रअ्में और अगर ञादे राह की इस्तिताअत हो तो बैतुल्लाह शरीफ़ का हजूज करें, उस नौवारिद ने कहा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने सय इरमाया है, हम उसकी इस बात पर मुतअश्जिब हूअे के पेहले तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सवाल करता है इर पुद ही तस्टीक़ ली कर रहा है, इसके बअ्द उसने कहा मुजे बताएअे के इमान क्या है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने इरमाया, इमान ये है के आप अल्लाहतआला, उसके इरिशतों, उसकी क़िताबों, उसके रसूलों, रोअे क़्यामत और तकदीरे जैर व शर पर मुक़म्मिल इमान रअ्में, तब उसने कहा मुजे बताअे के इहसान क्या है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने इरशाद इरमाया इहसान ये है के आप अल्लाहतआला की इबादत इस ज़ुशूअ व ज़ुशूअ और इनाअत व ज़ुशूअ से करें के गोया आप उसे बयश्मे ज़ुद देज रहे हैं और अगर आप इस रुतबे ज़ुलंद को नहीं पा सकते तो कम अज़् कम ये आलम तो ञरूर ही होना याहिये के वह (अल्लाहतआला) आपको देज रहा है तो उसने कहा मुजे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ये बताअे के क़्यामत कब आनेवाली है ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इरमाया जिस से सवाल क़िया ज़ रहा है वह पुक़ूअे क़्यामत के बारे में सवाल करनेवाले से ज़्यादह नहीं जानता तो उसने कहा अलामाते क़्यामत ही बता दें, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इरमाया : “लौडी अपने आका को ज़नम देगी और आप देजेंगे के नंगे पाअों नंगे बदन लेड-बक़रियां चराते इरनेवाले लोग बडी-बडी इमारतों बनाने में इअ्र करेंगे.”

हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु केहते हैं के इतनी बातें करने और सुन लेने के बअ्द वह नौवारिद तो चला गया मगर हम थोडी देर तक सरासीमह (हैरान, परेशान) व ज़ामोश ढैठे रहे, तब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इरमाया : “अय उमर (रदियल्लाहु तआला अन्हु) क्या आप जानते हैं के ये नौवारिद साइल कौन था ?” हमने कहा अल्लाह और उसके रसूल ही ज़्यादह बेहतर जानते हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

मताया के ये जिबरदगले अमीन थे जो अेक अजमल की शकल में तुम्हें उमूरे दीन की तअलीम देने आये थे.” (सहीह बुजारी, सहीह मुस्लिम)

तीसरा उसूल

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मअरिफत :

आपका नाम नामी एस्मे गिरामी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम है, बनी हाशिम कबीलह कुरैश से और कुरैश अरब से और अरब हजरत एस्माएल बिन एबराहीम जलीलुल्लाह अलैहिमा व अला नबीय्यीना अक्खलुस्सलातु वरसलाम की ओलाद से हैं.

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने जुमलह तिरसठ (५३) बरस उमर शरीफ पाए जिन में से चालिस बरस बिअ्थत व नबुव्वत से पेहले और तेईस (२३) साल जहैषियत नबी व रसूल गुजारे. आपकी जाये पैदाएश मक्का मुकर्रमह है.

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गुजूले, (एकर'अ बिस्मी रब्बीकल्लज़ी ज-ल-क. सूरतुल अलक आयत-१) के साथ शई नबूव्वत हासिल हूए और गुजूले (या अय्युहल मुद्दएषीर कुम इ-अन्ज़ीर. सूरतुल मुद्दएषीर - आयत १, २) के साथ बारे रिसालत से मुशरफ़ हुअे, अल्लाहतआलाने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शिक से डराने और तोहीट की एअ्पत देने के लिअे मज्जीब इरमाया, एस जात की दलील ये एशाएि बारी तआला है : “अेय औड लपेट कर लेटनेवाले उठो, और जबरदार करो, और अपने रब की बडाए का अैलान करो, और अपने कपडे पाक रज्जो, और गंदगी से दूर रहो, और एहसान न करो ख्यादह हासिल करने के लिअे, और अपने रब की जातिर सबर करो.”

(सूरतुल मुद्दएषीर आयत - १ से ७)

शई मुइरदात :

• **(कुम इ-अन्ज़ीर)** आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एन लोगो को शिक से डराअे और तोहीट की तरफ़ एअ्पत दें. (सूरतुल मुद्दएषीर आयत- २)

• **(वरब्बक इकब्बीर)** तोहीट के साथ अल्लाहतआला की अज़मत बयान करें. (सूरतुल मुद्दएषीर आयत- ३)

• **(वषीयाबक इतहहीर)** अपने अअ्माल को शिक से पाक करें. (सूरतुल मुद्दएषीर आयत- ४)

• **(वरइज-अ इहुर)** “अरइज-अ” का मअ्नी अस्नाम (बुत) और

“इहजुर” (एन से हिजरत कर) का मतलब ये है के जिस तरह अब तक आप एन से दूर रहे हैं एसी तरह एनके बनाने और पूजनेवालों से दूर रहें और एन अस्नाम और एनके परस्तार मुशिरकों से बेजारी व बराअत का एख्तार करें.

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने एस अहम बुनियाटी नुकते पर एस साल सई किये और लोगों को तौहीद की तरफ् एख्तव देते रहे, एस साल के बख्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आस्मानों की सैर (मिअराज) कराए गए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पंजगाना नमाज् इर्क की गए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन साल तक मक्का मुकर्रमह में नमाज् अदा करते रहे, एसके बख्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदीनह मुनप्परह की तरफ् हिजरत कर जाने का हुक्म मिल गया. और बलदे शिर्क से बलदे एस्लाम की तरफ् मुन्तकिल हो जाने का नाम हिजरत है. और ये बलदे शिर्क से बलदे एस्लाम की तरफ् हिजरत और नकले मकानी करना एस उम्मेते मुहम्मदियह पर इर्क है और ये इरीजह कयामत तक बाकी है, एस बात की दलील ये इमराने एलाही है : “जो लोग अपनी नफ्स पर खुल्म कर रहे थे, उनकी इहेँ जब इरिशतोंने कब्ज की तो उनसे पूछा के ये तुम किस हाल में मुबतला थे, उन्होंने जवाब दिया के हम जमीन में कम्जोर और मजबूर थे, इरिशतोंने कहा, “क्या अल्लाहतआला की जमीन पसीअ न थी के तुम उस में हिजरत करते.” ये वह लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वह बडा ही बुरा ठिकाना है, हां जो मर्द-औरतें और बच्चे पाकए बेबस हैं और निकलने का कोए रास्ता और खरिअह नहीं पाते, बर्ह नहीं के अल्लाह उन्हें मुआफ़ कर दे, अल्लाह बडा मुआफ़ करनेवाला और दरगुजर इरमानेवाला है.” (सूरतुल निसा आयात- ८७ से ८८)

दीगर एशदि बारी तआला : “अेय मेरे बंदों ! जो इमान लाये हो, मेरी जमीन पसीअ है पस तुम मेरी ही बंदगी बज लाओ.”

(सूरतुल अन्कबूत आयत- ५५)

इमाम बग्वी रहमतुल्लाह अलैहि ने एस आयत के शाने नुखूल के बारे में कहा है : “ये आयत उन मुसलमानों के बारे में नाखिल हूँ जो मक्का शरीफ़ में रह गये और जिन्होंने हिजरत न की, अल्लाहतआलाने उन्हें इमान के नाम से निदा दी और पुकारा है.”

हदीष से हिजरत की दलील रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ये एशदि गिरामी है : “जब तक तौबह का दरवाजह बंद नहीं हो जाता तब तक हिजरत का सिल्सिलह मुन्कतअ नहीं होगा जब के तौबह का दरवाजह उस पक़्त तक बंद नहीं होगा जब तक के सूरज मग़्रिब से तुलूअ (रोझे कयामत) नहीं होता.” (अबूदापूद-सहीह)

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने मदीनह मुनप्परह में अपने कदम

जून जमा लिये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बकियह अह्काम व शाराय्ने इस्लाम मफलन ञ्कत, रोञह, हज्ज, अञान, जिहाद, अन्न भिल् मअरूक् ओर नही अनिल मुन्कर का हुक्म दिया गया ओर एन उमूर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने दस बरस गुञारे तब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने पञात पाय मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एीन कयामत तक बाकी रहेगा.

एीने इस्लाम ओर शरीअते मुहम्मदियह का जुलासा

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एीन (मुफ्तसर मगर जामिअ व मानिअ जुलासह) ये है :

बलाय का कोय ऐसा काम नहीं के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने उम्मत को उसकी इत्तिलाअ न की हो ओर बुराय का कोय काम ऐसा नहीं के जिस से उम्मत को मुतनब्बह न किया हो.

जिस बलाय की तरक् आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने रहनुमाय इरमाय है, वह तोहीटे बारी तआला ओर हर वह काम है जिसे अल्लाहतआला पसंद करता है ओर जो उसकी रिञा के हुसूल का ञरीअह है. ओर जिस बुराय से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने रोका ओर मुतनब्बह किया वह शिर्क ओर हर वह काम है जिसे अल्लाहतआला नापसंद करता है ओर बुरा समजता है.

अल्लाहतआलाने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पूरी इन्सानियत (तमाम लोगों) की तरक् मबुध किया ओर हर दो आलम जिन्न व इन्स पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत व इर्माबदारी इर्क करार दी है, इंस बात की दलील ये इशाटि बारी तआला है : “(अय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप केह दीजिये अय इन्सानों ! मैं तुम सब (इन्सानों) की तरक् अल्लाह का पयगम्बर हूं.” (सूरतुल आअ्राइ आयत- १प८)

अल्लाहतआलाने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर एीने इस्लाम की तक्मील की (एीन व दुनिया के तमाम मसायल का हल पेश किया ओर उस में किसी किस्म की कोय तिशनगी ओर कमी बाकी नहीं छोडी) जिसकी दलील ये इमनि इलाही है : “आज मैंने तुम्हारे एीन को तुम्हारे लिये मुकम्मिल कर दिया है ओर अपनी निअ्मत तुम पर तमाम कर दी है ओर तुम्हारे लिये इस्लाम को तुम्हारे एीन की हेचीयत से कुबूल कर लिया है.” (सूरतुल मायदह आयत- 3)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंस दुनिया से पञात पा जाने की दलील कुअनि पाक में अल्लाहतआला का ये इशाटि है : “अय नबी ! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप को ली मरना है ओर इन लोगों को ली

मरना है, आभिर कार क्यामत के रोऊ तुम सभ अपने रब के हुजूर अपना-अपना मुकद्दमा पेश करोगे.” (सूरतुल जुमर आयत-30,39)

तमाम लोग मरने के बअद (रोऊ महशर जऊा व सऊा के लिये) दोबारह उठाये जायेंगे, जिसकी दलील ये एशति एलाही है : “एसी ऋमीन से हमने तुमको पैदा किया है और एसी में हम तुम्हें वापस ले जायेंगे और एसी से तुमको दोबारह निकालेंगे.” (सूरतुल ताहा आयत- 55)

और ये एशति रब्बानी ली बअष बाअदुल मोत की दलीले कातिअ है : “और अल्लाहने तुमको ऋमीन से भास तौर से पैदा किया फिर वह तुम्हें एसी ऋमीन में वापस ले जायेगा और (क्यामत के रोऊ फिर एसी ऋमीन से) तुमको थकायक निकाल भडा करेगा.” (सूरतुल नूह आयत- 17, 18)

दोबारा उठाये जाने के बअद लोगों से हिसाब किताब लिया जायेगा और उनके अअ्माल (हसनह व सथियअह) के मुताबिक उन्हें जऊा व सऊा दी जायेगी, जिसकी दलील ये इमराने बारी तआला है : “और ऋमीन और आस्मानों की हर चीज का मालिक अल्लाह ही है ताके अल्लाह बुराई करने वालों को उनके अमल का बदला दे और उन लोगों को अच्छी जऊा से नपाके जिन्होंने नेक रवैया एफितयार किया है.” (सूरतुल नज्म आयत- 39)

जिसने (बअष बाअदुल मोत) मरने के बअद दोबारह उठाये जाने का एन्कार किया वह काफिर हो गया जिसकी दलील ये एशति रब्बानी है : “काफिरोंने बडे दअ्वे से कहा है के वह मरने के बअद दोबारह हर्गिज नहीं उठाये जायेंगे, उनसे कहो नहीं मेरे रब की कसम तुम ऋदर उठाये जाओगे फिर ऋदर तुम्हें बताया जायेगा के तुमने (दुनिया में) क्या कुछ किया है और ऐसा करना अल्लाह के लिये बहुत आसान है.” (सूरतुल तगाबुन आयत - 7)

अल्लाहतआलाने तमाम रसूलों को (नएमे जन्नत की) बशाारत देने और (अऊाबे जहन्नम) से डरानेवाले बना कर भेजा था, जिसकी दलील ये इमराने एलाही है : “ये सारे रसूल भुशभबरी देनेवाले और डरानेवाले बना कर भेजे गये थे ताके एनको मबउीष कर देने के बअद लोगों के पास अल्लाह के मुकाबले में कोई उऊर बाकी न रहे.” (सूरतुल निसा आयत - 155)

रसूलों में से सभ से पेहले रसूल हऊरत नूह अलैहिस्सलाम और सभ से आभरी रसूल हऊरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भातमुन्नबीय्यीन हैं, हऊरत नूह अलैहिस्सलाम के पेहले रसूल (न के पेहले नबी) होने की दलील ये एशति एलाही है : “अथ नबी ! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ एसी तरह वही भेजा है जिस तरह नूह (अलैहिस्सलाम) और उनके बअद के पयगम्बरों की तरफ़ भेजा थी.” (सूरतुल निसाअ आयत - 153)

हर उम्मत की तरफ़ अल्लाहतआलाने हज़रत नूह अलेहिस्सलाम से लेकर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक रसूल भेजे हैं जो अपने उम्मतियों को अल्लाहतआला की एजाएत का हुक्म देते और “तागूत” की एजाएत से मनअ करते चले आये हैं, जिसकी दलील ये एशादि एलाही है : “हमने हर उम्मत में एक रसूल भेज दिया और उसके ऋीअे सब को जबरदार कर दिया के ‘अल्लाह’ की बंदगी करो और ‘तागूत’ की बंदगी से बचो.” (सूरतुल नह्ल आयत - 35)

अल्लाहतआलाने तमाम बंटों (जिन्न व एन्स) पर “तागूत” का एन्कार व कुदर और अल्लाह पर एमान लाना इर्ज़ करार दिया है, एमाम एब्ने कैय्यीम रहमतुल्लाह अलैहि “तागूत” की तअरीफ़ जयान करते हूअे केहते हैं :

“जिस किसी भी जातिल मअबूद (जिस गेरुल्लाह की एजाएत की जाअे) या मत्बूअ (जिस की अैसे उमूर में एत्तजाअ की जाअे जिन में अल्लाहतआला की मअसियत हो) या मुताअ (जिस की एताअत उमूरे हिल्लत व हुर्मत में एस तरह की जाअे के जिस में इराभीने एलाही की मुजालिफ़त हो) की वजह से बंटा अपनी हुदूए बंदगी (जालिस एजाएते एलाही) से तजवुज़ कर जाअे वही चीज़ “तागूत” है और तागूत तो जेशुमार हैं मगर एनके सरबर आपर्दह पांय हैं :

(१) एबलीसे लएन.

(२) अेसा शअ्स जिस की एजाएत की जाअे और वह एस इेअ्ल पर रज़ामंए हो.

(३) जो शअ्स लोगों को अपनी एजाएत करने की दअ्पत देता हो.

(४) जो शअ्स एल्मे गेब जानने का दअ्पा करता हो.

(५) जो शअ्स अल्लाहतआला की नाज़िल की हूए शरीअत के जिलाइ इेसला करे.

और एस जात की दलील ये एशादि जारी तआला है : “दीन के मुआमले में कोए और जबरदस्ती नहीं है क्युंके हिदायत यकिनन गुमराही से मुम्ताज़ हो चुकी है, अब जो कोए “तागूत” का एन्कार कर के अल्लाह पर एमान ले आया, उसने अेक अेसा मअबूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं है और अल्लाह सब कुछ सुननेवाला और जाननेवाला है.”

(सूरतुल बकरह आयत- २५५)

यही ला एलाहा एल्लल्लाह (अल्लाह के सिवा कोए मअबूटे बर् हक्क नहीं) का सहीह मइहूम व मअनी है.

हदीचे पाक में रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एशादि है : “एस दीन की असल चीज़ “एस्लाम” है और एस का सुतून नमाज़ है और एसका आअ्ला तरीन मर्तबह व मकाम जिहाद इी सबीलि्ल्लाह है.”

(तबरानी कबीर, एसे सूयूतीने जामिअस्सगीर में सहीह कहा है और एमाम मनापीने अपनी शरहमें हसन कहा है.) पल्लाहु अअ्लम.